7

जादू से

सन्तोष सुपेकर

"क्या लिख रहे हो बेटा?" पिता ने ग्यारह वर्षीय पुत्र से पूछा।

"बाबा ,मैं ....मैं..है न!दुनिया की महाशक्ति .....के नेता को पत्र लिख रहा हूँ कि युद्ध न छेड़ें वह।"

"ओह "पिता का गला भर आया। अपने बेटे को कलेजे से लगाते हुए वह याद करने लगा, गाँधीजी का हिटलर को महायुद्ध रोकने से लिखा गया पत्र , अपने बचपन में भोगी हुई युद्ध विभीषिका और यह भी कि काश मेरे बच्चे सी सोच, उस जैसी बुद्धि ...दुनिया की हर महाशक्ति के मदमस्त नेता को मिल जाए, जादू से।

बिहाइन्ड द सीन

" सर आपको ...स्मृति पुरस्कार की बधाई।" के.जी...साहब से मैंने कहा।

" जी धन्यवाद।"

" सर सुना है , सम्मान के साथ ही कैश पाँच हज़ार रुपये भी मिले थे आपको जो आपने बाद में वापस कर दिये ? " मैंने कुछ झिझक से पूछा।

" हाँ," मेरा चेहरा पढ़ते हुए उन्होंने कुछ कठिन स्वर में कहा, " सही सुना तुमने। मैंने कार्यक्रम के दौरान रकम वापसी की कोई घोषणा नहीं की लेकिन बाद में मंच के पीछे , उस संस्था के सहायतार्थ अध्यक्ष को वे रुपये वापस कर दिये।"

" कमाल है सर!" मैंने हैरत से पूछा,"आप चाहते तो मंच पर ही रुपये वापस करने की घोषणा कर सकते थे जैसा कि अक्सर लेखक करते हैं। उससे आपका और नाम होता।"

" वाहवाही तो मेरी हो जाती मगर होता क्या फिर, पता है?" उन्होंने पूछा।

" जी? "

" फिर मेरी तरह अन्य पुरस्कृत लेखकों पर भी अप्रत्यक्ष रूप से मेरे अनुसरण का दबाव बन जाता और न चाहते हुए उनको भी पुरस्कृत रकम की वापसी की घोषणा करना पड़ती। मैं तो जानता था न, दूसरे -तीसरे नम्बर के विजेता लेखक निम्न मध्यम वर्ग के , संघर्षशील जीवन जीने वाले कलमकार हैं। इसलिए मैंने सार्वजनिक रूप से यह कदम नहीं उठाया। "

31, सुदामा नगर, उज्जैन

ISSN:2583-8849